“बीती विभावरी जाग री” (कवि -जयशंकर प्रसाद)

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ
• विभावरी	• रात्रि
• अम्बर पनघट	• आकाश रुपी पनघट
• तारा घट	• तारे रुपी घट
• उषा	• प्रातः वेला , सुबह
• नागरी	• स्त्री
• खग - कुल	• पक्षियों का समूह
• कुल - कुल	• पक्षियों का कलरव
• किसलय	• कोपलें (नए-नए पत्ते)
• लतिका	• लता , बेल
• मुकुल	• अधखिला फूल
• नवल	• नया
• गागरी	• गगरी
• अधरों	• होठों
• राग	• लगाव , प्रेम रस , भारतीय शास्त्रीय संगीत में गाने का आधार
• विहाग	• एक राग का नाम जो रात्रि के समय गाया जाता है
• अमंद	• कम नही होने वाला , जो मंद न हो
• अलकों	• केशों
• मलयज	• सुवासित पवन , सुगन्धित वायु
• आली	• सखी